अमर उजाला

लखनऊ | बुधवार | 31 दिसंबर 2014

गन्ने की खेती में वियतनाम की मदद करेगा आईआईएसआर

लखनऊ। वियतनाम में गन्ने की खेती के लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) मदद करेगा। यह सहमति वियतनाम से आए प्रतिनिधिमंडल व आईआईएसआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन से मुलाकात के दौरान बनी। निदेशक ने वियतनाम को आईआईएसआर द्वारा विकसित तकनीक व अन्य जरूरी मदद भी दी जाएगी। गौरतलब है कि वियतनाम के प्रतिनिधिमंडल का तीन दिन का दौरा मंगलवार को खत्म हुआ। पांच सदस्यीय दल में लाम सन शुगर कंपनी के अध्यक्ष ले वान टैम और उनके चार अधिकारी डो नांग विन्ह, हा थी थूये, ट्रान जूआन ट्रंग, नूयेन डुये खाई आए हुए थे। दल ने खेतों में 15 फीट तक लंबे गन्ने और 125 टन/हेक्टेयर उपज की वजह भी जानी।

जनसंदेश टाइम्स लखनऊ, बुधवार, 31 दिसम्बर 2014

आइआइएसआर करेगा वियतनाम की तकनीकी मदद

लखनऊ। वियतनाम के चीनी उद्योग के पाँच उच्च अधिकारियों का दल तीन दिवसीय भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का दौरा मंगलवार को सम्पन्न हो गया। लाम सन शुगर कम्पनी के अध्यक्ष ले वान टैम की अध्यक्षता में अन्य चार अधिकारी डो नाँग विन्ह, हा थी थूये, ट्रान जूआन ट्रंग तथा नूयेन डूये खाई ने भ्रमण के दौरान संस्थान द्वारा विकसित गन्ना उत्पादन तकनीकों तथा चुकन्दर उत्पादन तकनीक पर वैज्ञानिकों से विस्तार-पूर्वक चर्चा किया। उन्नत गन्ना प्रजातियों जैसे कोलख 94184, कोलख 9709, को.0238, को.पीके.05191 की फसल संस्थान प्रक्षेत्र में देखकर काफी प्रभावित हुए। साथ ही वियतनामी दल ने संस्थान द्वारा विकसित चुकन्दर प्रजातियाँ एल.स.6, आईआईएसआरक्र काम्प 1, लक्रे. 2010 को भी देखा जिसकी उत्पादन क्षमता लगभग 70-80 टन/हे0 तथा सुक्रोज 15 प्रतिशत है। वियतनाम के अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों ने उत्पादन तकनीक को अपने देश में प्रयोग करने की भी इच्छा जताई।

इस इवसर पर संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने संस्थान की उपलब्धियों से मेहमानों को अवगत कराते हुए कहा कि भविष्य में संस्थान अपनी उन्नत तकनीकों तथा नवीन प्रसार कार्यक्रम को चलाकर 100 टन/हे. गन्ना उपज तथा 11 प्रतिशत चीनी परता 2030 तक प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारण किया है। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. ए के

भ्रमण

गन्ना उत्पादन बढ़ाने के लिए हर संभव सहायता, वियतनाम के पांच उच्चाधिकारियों ने किया दौरा

साह ने कहा कि वियतनाम में वर्तमान के गन्ना उपज लगभग 55-60 टन/हे. तथा चीनी परता 8-85 प्रतिशत को बढ़ाने में संस्थान हर-संभव तकनीकी सहायता देने को तैयार है। संस्थान द्वारा विकसित कम्प्यूटर आधारित गन्ना में विकार पचानने का विशेषज्ञ प्रणाली 'केनडेस' को मेहमानों ने काफी सराहा तथा इस विशेषज्ञ- प्रणाली में वियतनाम के गन्ना उत्पादन परिवेश के अनुसार परिवर्तन कर वहाँ प्रयोग में कैसे लाया जाये इस पर भी विचार-विमर्श किया गया। मेहमानों ने संस्थान द्वारा विकसित जैव-उर्वरक उत्पादन ईकाई, जैव-नियंत्रण प्रयोगशाला तथा गुड़ उत्पादन ईकाई का भी भ्रमण कर संबंधित वैज्ञानिकों से इन तकनीकों पर साझा कार्यक्रम चलाने पर चर्चा किया। भ्रमण के दौरान विसवाँ चीनी मिल, विसवाँ का दौरा किया तथा वहाँ किसानों के खेतों पर संस्थान द्वारा चलाए जा रहे गन्ना तकनीक प्रसार कार्यक्रम को नजदीक से देखा तथा समझा। किसानों के खेतों पर 15 फीट लम्बा गन्ना तथा 125 टन/हे. उपज वाला गन्ना देखकर काफी प्रभावित हुए। साथ ही उन्होंने मिल में जैव-उर्वरक उत्पादन तकनीक तथा इथनॉल उत्पादन ईकाई को भी देखा तथा प्रभावित हुए। संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों का लाभ वियतनाम को कैसे मिले इस पर वियतनाम के अधिकारियों तथा संस्थान के निदेशक के बीच साझा कार्यक्रम चलाने पर विचार विमर्श हुआ तथा निकट भविष्य में इस साझा कार्यक्रम की रूप रेखा पर रणनीति बनाने की उम्मीद जताई गई। वसं.

the pioneer
LUCKNOW | WEDNESDAY | DECEMBER 31, 2014

Vietnam team interested in IISR technologies, varieties

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

A high-level Vietnamese delegation led by Lam Son Sugar Company chairman Le Van Tam visited the Indian Institute of Sugarcane research here for detailed interaction with scientists.

During the visit from December 28 to 30, Vietnamese delegation evinced interest in the study of sugarcane and sugar beet technologies developed by IISR and explored the areas of sugarcane research for joint collaboration.

The delegation comprised, besides Tam, Do Nang Vinh, Ha Thi Thuy, Tran Xuan Trung and Nguyen Duy Khai.

The research and sugarcane technologies developed by IISR for subtropical climatic condition attracted the Vietnamese delegation. The visitors showed special interest in studying technology, development mechanism and sugar industry here.

IISR Director, Dr S Solomon, highlighted the technological achievements of the institute, the challenges ahead before sugarcane and sugar sector globally and the institute's future plan to address these challenges.

He said that sugar industry in India was important for socio-economic development of rural areas.

He said to achieve the target of sugar production, IISR had formulated the strategy to increase the recovery rate to 11 per cent.

IISR's principal scientist, Dr AK Sah, said the institute could offer technical support to Vietnam in many areas of research, development, training, consultancy.

He said the techniques developed by IISR, like cane varieties, STP, ring-pit method of planting, can-node technique, sugarcane-based intercropping, bio-control of insect and pests, MHAT for 3-tier seed programme, could be quite helpful in increasing yield of sugarcane in Vietnam.

The delegation took keen interest in CaneDES, a computer-based system for diagnosis of sugarcane disorders. The delegation felt that with some modifications and technical support from IISR, CaneDES could help improve sugarcane production in Vietnam.

The delegation was also interested in sugar beet varieties like LS6, IISR Compl, LKC 2010 with yield potential of 70-80 t/ha and 15 per cent sucrose content. Bio-control techniques like use of Tricho card for management of borer pests, light pheromone combo trap for control of white grub, Trichoderma application for diseases management were explained and shown to the visitors and they were quite convinced with their application in Vietnamese conditions.

The delegation also visited the jaggery unit to learn techniques of organic jaggery making. The delegation discussed in detail with IISR authority the ways and means of having collaborative programmes on all these techniques and their possible application in Vietnam to increase cane and sugar yield from present level of average 55-60 t/ha cane and 8% sugar recovery.

As part of the study tour, the delegation visited Biswan Sugar Mill in Sitapur district and interacted with its officers to understand the implementation of development activities in the mill areas. The visitors closely observed the distillery unit, bio composting and affluent disposal unit and discussed them in detail.

It was a pleasant surprise for the visitors to see 15-foot long standing cane crop in the fields of farmers with a yield of 125 t/ha.

The Vietnamese delegation evinced interest in collaboration with IISR for adoption of IISR technologies in their country.

Meanwhile, the National Academy of Agricultural Sciences' northern chapter at Lucknow convened a meeting at the Indian Institute of Sugarcane Research here to discuss various innovative options to reduce the cost of cane cultivation, especially in sub-tropical part of the country. Dr Solomon highlighted various agro-techniques developed at IISR to reduce the cost of cane cultivation and sugar production.

Techniques like new planting materials, application of bio-fertilisers, bio-control measures, new varieties with quality seed and mechanisation of sugarcane planting and harvesting were discussed.

Presentations were made by IISR scientists.

Dr Subodh Yadav, Commissioner of Agriculture, Karnataka, highlighted sugarcane cultivation and harvesting in his state. After discussion, it was realised that the techniques and technologies developed at IISR, Lucknow could reduce the cost of cane cultivation by 25-30 per cent.

Head of IISR's Plant Physiology and Biochemistry Department, Dr Amaresh Chandra, was the organising secretary of the meet.

लखनऊ, 31 दिसंबर 2014 दैनिक जागरण

गन्ना उत्पादन के गुर सीखेगा वियतनाम

- आइआइएसआर में विकसित तकनीकों का लाभ उठाने के लिए साझा कार्यक्रम पर सहमति

जागरण संवाददाता, लखनऊ : भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आइआइएसआर) वियतनाम को गन्ना उत्पादन के साथ-साथ जैव उर्वरक उत्पादन की तकनीक बताएगा। यही नही, संस्थान द्वारा चुकंदर उत्पादन तकनीक की जानकारी भी साझा की जाएगी।

आइआइएसआर में बीते तीन दिनों से वियतनाम का एक प्रतिनिधिमंडल दौरे पर था। दल ने संस्थान के वैज्ञानिकों से गन्ना उत्पादन पर विस्तार से चर्चा की। इसके अलावा चुकंदर की उन प्रजातियों को भी देखा, जिसे संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया। वियतनाम के वैज्ञानिक दल ने गन्ने और चुकंदर के उत्पादन तकनीक का अपने देश में प्रयोग करने की इच्छा जताई।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने संस्थान के भावी शोध कार्यों की जानकारी दी। इस अवसर पर प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने कहा कि वियतनाम में वर्तमान में गन्ना उपज लगभग 55-60 टन प्रति हेक्टेयर है और चीनी परता 8-8.5 फीसद है। संस्थान इसे बढ़ाने में वियतनाम का सहयोग करेगा। गन्ने में होने वाली बीमारियों की पहचान के लिए संस्थान द्वारा विकसित 'के नडेस' प्रणाली को वियतनाम के परिवेश के अनुसार परिवर्तित कर उपयोग में लाए जाने पर भी विचार-विमर्श हुआ। इसके अलावा गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी के साझा प्रयोग पर भी सहमति जताई गई।

कल्पतरु एक्सप्रेस
लखनऊ, बुधवार, 31 दिसम्बर 2014

वियतनाम को गन्ना उत्पादन में सहयोग करेगा भारत

- पांच सदस्यीय दल ने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का किया दौरा
- संस्थान की विभिन्न इकाइयों सहित बिसवां में फसल का लिया जायजा

कल्पतरु समाचार सेवा

लखनऊ। वियतनाम की शुगर कम्पनी लाम सन शुगर कम्पनी के अध्यक्ष ले वान टैम के नेतृत्व में डो नांग विन्ह, हा थी थूये, ट्रान जूआन ट्रंग तथा नूयेन डूये खाई ने भारतीय गन्ना अनुसंधान का दौरा किया। इस दौरान इन्होंने गन्ना एवं चुकन्दर उत्पादन तकनीक पर वैज्ञानिकों से विस्तारपूर्वक चर्चा की। संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने संस्थान की उपलब्धियों, भविष्य की उन्नत तकनीकों तथा नवीन प्रसार कार्यक्रम चलाकर 100 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना उपज तथा 11 प्रतिशत चीनी परता वर्ष 2030 तक प्राप्त करने के लक्ष्य के बारे में जानकारी दी।

संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने बताया कि वियतनाम में वर्तमान में गन्ना उपज लगभग 55-60 टन प्रति हेक्टेयर तथा चीनी परता 8-8.5 प्रतिशत है। इसे बढ़ाने में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान हरसंभव तकनीकी सहायता देने को तैयार है। 'केनडेस' प्रणाली को मेहमानों ने काफी सराहा तथा इस विशेषज्ञ- प्रणाली में वियतनाम के गन्ना उत्पादन परिवेश के अनुसार परिवर्तन कर वहां पर इसका प्रयोग करने के बारे में विचार-विमर्श किया गया। संस्थान द्वारा विकसित जैव-उर्वरक उत्पादन इकाई, जैव-नियंत्रण प्रयोगशाला तथा गुड़ उत्पादन इकाई का भी दौरा किया गया और संबंधित वैज्ञानिकों से इन तकनीकों पर साझा कार्यक्रम चलाने पर बात की गई।

पांच सदस्यीय दल ने बिसवां चीनी मिल, बिसवां का दौरा किया तथा वहां किसानों के खेतों पर संस्थान द्वारा चलाए जा रहे गन्ना तकनीक प्रसार कार्यक्रम को नजदीक से देखा। वे किसानों के खेतों में 15 फीट लम्बा गन्ना तथा 125 टन प्रति हेक्टेयर उपज वाला गन्ना देखकर काफी प्रभावित हुए।

उन्होंने मिल में जैव-उर्वरक उत्पादन तकनीक तथा इथेनॉल उत्पादन इकाई को भी देखा। वियतनाम के अधिकारियों तथा संस्थान के निदेशक के बीच निकट भविष्य में साझा कार्यक्रम बनाने पर भी चर्चा हुई।